जयपुर, गुरुवार 6 मई, 2010

महका भारत

उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्नि बोधत

वर्ष 7 अंक 244 (वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि 2067) मूल्य 1.50 रु. नगर संस्करण (जयपुर, अजमेर, टोंक, सीकर से एक साथ प्रकाशित) पृष्ठ-14

'आपणो स्वास्थ्य, आपणे हाथ' से सजग हुए ग्रामीण

सेव दी चिल्ड्रन टीम ने किया गांवों का दौरा

जयपुर, 5 मई (कासं)। बाल अधिकारों के लिए कार्यरत संस्था 'सेव दी चिल्ड्रन' के अध्यक्ष हरपाल सिंह व मुख्य कार्यकारी अधिकारी थॉमस चेण्डी ने बांसवाड़ा जिले के दो जनजाति बहुल गांवों में दौरा कर 'आपणो स्वास्थ्य, आपणे हाथ' कार्यक्रम के तहत पोषण, स्वास्थ्य, जल व सेनीटेशन के कार्यों को देखा। उन्होंने इन गांवों में परियोजना के सफल प्रयोग को देखकर इसे अन्य स्थानों पर भी लागू करने की मंशा व्यक्त की।

बांसवाड़ा में 'वाग्धारा' के सहयोग से संचालित परियोजना की प्रत्यक्ष जानकारी के लिए सेव दी चिल्ड्रन के दल ने गरनावट व हिम्मतसिंह का गढ़ा में ग्रामीणों से चर्चा की। उन्होंने ग्रामीणों से परियोजना के तहत स्वास्थ्य सुधार के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी ली। वाग्धारा के सचिव जयेश जोशी व सेव दी चिल्ड्रन के स्थानीय समन्वयक घासीलाल गुर्जर ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने गर्भवती महिलाओं, व पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए चलाए जा रहे जागरूकता अभियान, आंगनबाड़ी एवं आशा स्वास्थ्य कार्यकर्ता, जननी सुरक्षा कार्यक्रम तक वंचित वर्ग की पहुंच बनाने से ग्रामीण परिवेश में बदलाव आया है। सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता तुलसीदेवी ने बताया कि संस्था द्वारा प्रत्येक घर में निर्मित शौचालयों का उपयोग करने, घरों में साफ सफाई, हैण्डपम्प व व्यक्तिगत स्वच्छता से जीवन स्तर में सुधार आ रहा है। गांव के लोग हाथ धोने के बारे में भी सजग हुए हैं। इस अवसर पर उपस्थित ग्रामीण महिलाओं व बाल पंचायत के सदस्यों ने अपने अनुभव भी सुनाए। उल्लेखनीय है कि सेव दी चिल्ड्रन द्वारा स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से बांसवाड़ा, टोंक व चूरू के 120 गांवों में इस अभियान में 12 हजार परिवारों पर केन्द्रित 3 वर्षीय परियोजना सन् 2008 से चल रही है।